डाक का सफर

बच्चो, कंप्यूटर के इस युग में आप डाक टिकटों का प्रयोग न के बराबर करते हैं। पर एक बार याद रखें, यह हमारे सभ्याचार की प्रतीक होती हैं। इनकी सहायता से किसी देश के सभ्याचार आदि के बारे में आसानी से जाना जा सकता है। खास बात यह भी है कि डाक टिकट संग्रह करने का शौक दुनिया के अच्छे शौकों में गिना जाता है।

असल में डाक टिकट चिपकने वाले कागज से बना एक साक्ष्य है, जो यह दर्शाता है कि, डाक सेवाओं के शुल्क का भुगतान हो चुका है। आम तौर पर यह एक छोटा आयताकार कागज का टुकड़ा होता है, जो एक लिफाफे पर चिपका रहता है। यह टुकड़ा यह दर्शाता है कि प्रेषक ने प्राप्तकर्ता को सुपुर्दगी के लिए डाक सेवाओं का पूरी तरह से या आंशिक रूप से भुगतान किया है। डाक टिकट, डाक भुगतान करने का सबसे लोकप्रिय तरीका है; इसके अलावा इसके विकल्प हैं, पूर्व प्रदत्त-डाक लिफाफे, पोस्टकार्ड, हवाई पत्र आदि। डाक टिकटों को डाक घर से खरीदा जा सकता है। डाक टिकटों के संग्रह को डाक टिकट संग्रह या फिलेटली कहा जाता है।

फिलेटली

फिलेटली किसी भी राष्ट्र और राष्ट्र के लोगों, उनकी आस्था व दर्शन, ऐतिहासिकता, सांस्कृति, विरासत एवं उनकी आकांक्षाओं व आशाओं का प्रतिबिंब और प्रतीक है। जिसके माध्यम से वहां के इतिहास, कला, विज्ञान, व्यक्तित्व, वनस्पति, जीव-जन्तु, राजनयिक संबंध एवं जनजीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं की जानकारी मिलती है। वर्षों से फिलेटली महत्वपूण घटनाओं के विश्वव्यापी प्रसार, महान विभूतियों को सम्मानित करने एवं प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित करने के लिए कार्य कर रही है। डाक टिकट वास्तव में एक नन्हा राजदूत है, जो विभिन्न देशों का भ्रमण करता है एवं उन्हें अपनी सभ्यता, संस्कृति और विरासत से अवगत कराता है। निश्चित ही आज के व्यस्ततम जीवन एवं प्रतिस्पर्धात्मक युग में फिलेटली से बढ़कर कोई रोचक और ज्ञानवर्धक शौकनहीं हो सकता।

इतिहास

सबसे पहले इंग्लैंड में वर्ष 1840 में डाक- टिकट बेचने की व्यवस्था शुरू की गई। हालांकि इसके पहले ही डाक वितरण व्यवस्था शुरू हो चुकी थी, परंतु पत्र पहुंचाने के लिए पत्र भेजने वाले को पोस्ट ऑफिस तक जाना ही पड़ता था। पहले किसी भी पत्र भेजने वाले को पोस्ट- ऑफिस जाकर पत्र पर पोस्ट मास्टर के दस्तख्त करवाने पड़ते थे, पर डाक-टिकटों के बेचे जाने ने इस परेशानी से मुक्ति दिला दी। जब डाक-टिकट बिकने लगे, तो लोग उन्हें खरीदकर अपने पास रख लेते थे और फिर जरूरत पड़ने पर उनका उपयोग कर लेते थे। सन 1840 में ही सबसे पहले जगह-जगह लैटर-बॉक्स भी टांगे जाने लगे ताकि पत्र भेजने वाले उनके जरिए पत्र भेज सकें और पोस्ट-ऑफिस जाने से छुट्टी मिल गई।

विश्व में पहला डाक टिकट विश्व का पहला डाक टिकट 1 मई, 1840 को ग्रेट ब्रिटेन में जारी किया गया था, जिसके ऊपर ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया का चित्र छपा था। यह डाक टिकट काले रंग में एक छोटे से चौकोर कागज पर छपा था और उसकी कीमत एक पेनी रखी गई थी। उस समय इंग्लैंड के राजसिंहासन पर महारानी विक्टोरिया विराजमान थीं, इसलिए स्वाभाविक रूप से इंग्लैंड अपने डाक टिकटों पर महारानी विक्टोरिया के चित्रों को प्रमुखता देता रहा। रानी के चित्र छपने के कारण वहां की महिलाओं में अपनी रानी के चित्रवाले डाक टिकटों को इकट्ठा करने का जुनून सवार हो गया। ये महिलाएं ही डाक टिकट संग्रह के शौक की जननी बनीं।

एक पेनी मूल्य के इस टिकट के किनारे सीधे थे, यानी टिकटों को अलग करने के लिए जो छोटे-छोटे छेद बनाए जाते हैं, वे प्राचीन डाक टिकटों में नहीं थे। इस समय तक उनमें लिफाफे पर चिपकाने के लिए गोंद भी नहीं लगा होता था। यह डाक टिकट हालांकि पहली मई 1840 को बिक्री के लिए जारी किया गया था, लेकिन डाक शुल्क के लिए इसे 6 मई, 1840 से वैध माना गया। ये डाक टिकट विश्व के भी पहले डाक टिकट थे।

इस डाक टिकट की कहानी अत्यंत रोचक है। यदि हम डाक टिकटों के इतिहास का अध्ययन करें तो पेशे से अध्यापक सर रोलैण्ड हिल (1795-1878) को पहले डाक टिकटों का जनक कहा जाता है। जिस समय पत्रों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने का शुल्क तय किया गया और वह गंतव्य पर लिखा जाने लगा तो उन्हीं दिनों इंग्लैंड के एक स्कूल अध्यापक रोलैण्ड हिल ने देखा कि बहुत से पत्र पाने वालों ने पत्रों को स्वीकार करने से इंकार कर दिया और पत्रों का ढेर लगा हुआ है, जिससे कि सरकारी निधि की क्षति हो रही है। यह सब देखकर उन्होंने सन 1837 में डाक व्यवस्था में सुधार और डाक टिकटों द्वारा डाक

शुल्क की वसूली के बारे में दो शोधपत्र प्रकाशित किए। इनमें उन्होंने यह सुझाव दिया कि प्रत्येक आधे औंस के वजन के पत्र पर एक पेनी की समान डाक शुल्क दर लगाई जाए चाहे वह पत्र कितनी ही दूर जाता हो और यह डाक शुल्क पेशगी अदा की जाए। जहां तक डाक शुल्क का भुगतान करने का संबंध है, इस बारे में हिल ने मोहर लगे छोटे-छोटे लेबल जारी करने का सुझाव दिया, ताकि लोग पत्र भेजने के पहले उसे खरीदे और पत्र पर चिपका कर अपना पत्र भेजें। लेबल सिर्फ इतने बड़े होने चाहिए कि उन पर मुहर लग सके। गोंद लगे डाक टिकटों का उचित डिजाइन तैयार करने के लिए ब्रिटेन की सरकार ने प्रतियोगिता आयोजित की। इंग्लैंड शासित अनेक देशों के डाक टिकटों पर इंग्लैंड के शासकों के ही चित्र छपते थे। इससे डाक टिकटों में नीरसता आती गई। इसलिए इंग्लैंड में ही पहली बार जुलाई 1913 में जारी एक डाक टिकट 'ब्रिटेनिका' अलग तरह का नजर आना शुरू हुआ। इसके बाद तो टिकटों पर इतिहास, भूगोल, राजनीति, व्यक्ति, संस्कृति-सभ्यता, साहित्य-विज्ञान, जीव-जंतु, खेल-कूद, स्थापत्य-मूर्ति, चित्र-कलाओं आदि के विविध रंग-रूप देखने को मिलने लगते हैं।

भारत में पहला डाक-टिकट

चलते-चलते यह भी बता दें कि हमारे देश में डाक टिकटों की शुरुआत 1852 में हुई। 1 जुलाई, 1852 को सिन्ध के मुख्य आयुक्त द्वारा सिर्फ सिंध राज्य में और मुंबई कराची मार्ग पर प्रयोग के लिए 'सिंध डाक' नामक डाक टिकट जारी किया गया। आधे आने मूल्य के इस टिकट को भूरे कागज पर लाख की लाल सील चिपकाकर जारी किया गया था।

रास्ता ढूंढो

इस खूबसूरत महल तक पहुंचने के लिए आपको वो रास्ता तलाशना होगा, जो इस महल तक जाता है।

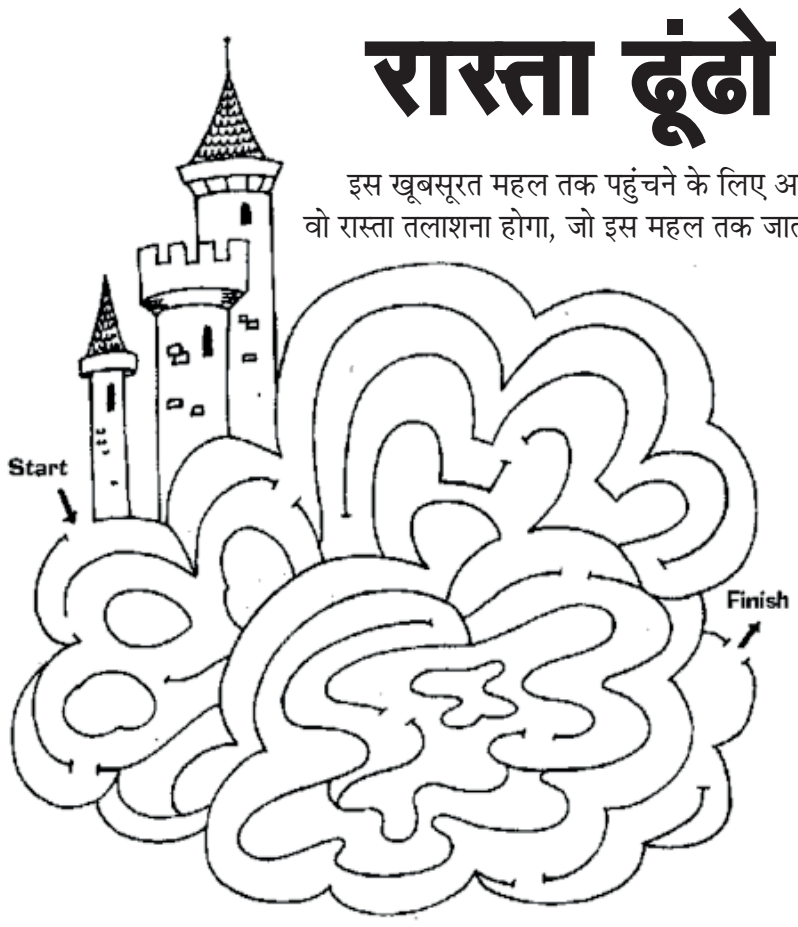

रंग भरो

राक्षस की हजामत...

जैसे ही नाई ने राक्षस को देखा उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। वहीं राक्षस नरम-नरम मांस देखकर खशी से नाच रहा था। पर नाई ने अक्ल से काम लिया और राक्षस की हजामत कर डाली। कैसे किया उसने यह कमाल, जानने के लिए पढ़ें यह कहानी।

बहुत दिन पहले एक गांव में आलसी नाई रहता था। सारा दिन वह पुराने आईने के सामने बैठा टूटे कंघे से बाल संवारते हुए गंवा देता। उसके अलावा उसके घर में उसकी पत्नी और बूढ़ी मां भी रहती थीं। उसके इस आलसीपन से मां बहुत ही गुस्साती, पर बड़बड़ाने के अलावा कुछ कहती नहीं। एक दिन मां को बहुत ही गुस्सा आया और उसने नाई की झाड़ू से पिटाई कर दी। वहीं नाई की पत्नी ने भी मां का साथ देते हुए भला बुरा कहा। इस बात से आहत वह नाई घर छोड़कर जंगल की ओर चल पड़ा। उसने कसम खाई कि जब तक कुछ धन जमा नहीं कर लेगा, वह घर नहीं लौटेगा। पर उसे कोई काम तो आता नहीं था, सो सहायता के लिए भगवान से प्रार्थना करने लगा।

इससेप पहले कि वह प्रार्थना के लिए बैठता, उससे पहले ही एक ब्रह्मराक्षस आ धमका। उसे देख कर नाई के होश उड़ गए, पर उसने अपना डर जाहिर नहीं होने दिया। वह भी ब्रह्मराक्षस के साथ नाचने लगा।

हंसते हुए उसने राक्षस से पूछा- 'तुम क्यों नाच रहे हो? तुम्हें किस बात की खुशी है?' राक्षस हंसा- 'मैं इसलिए नाच रहा हूं कि मुझे तुम्हारा मांस खाने को मिलेगा। पर तुम क्यों नाच रहे हो?'

हंसते हुए नाई ने कहा- 'राजकुमार सख्त बीमार है। चिकित्सकों ने उसे एक सौ एक ब्रह्मराक्षसों के हृदय का रक्त पिलाने को कहा है। महाराज ने मुनादी करवाई है जो कोई यह दवा लाकर देगा, उसे वे अपना आधा राज्य देंगे। साथ ही उससे अपनी बेटी का विवाह भी करेंगे। बड़ी मुश्किल से मैंने एक सौ ब्रह्मराक्षस पकड़े हैं। तुम्हें मिलाकर एक सौ एक की संख्या पूरी हो जाएगी। और तुम्हारी आत्मा को मैंने पहले ही कब्जे में कर लिया है।' यह कहते हुए उसने जेब से छोटा आईना उसकी आंखों के सामने किया। राक्षस ने आईने में अपनी शक्ल देखी। थर-थर कांपते हुए उसने नाई से विनती की कि उसे छोड़ दे, पर नाई राजी नहीं हुआ। तब राक्षस ने उसे धन का लालच दिया। पर नाई ने अनिच्छा जताई। राक्षस ने कहा- 'खजाना ले लो, पर मुझे छोड़ दो।'

कहने के साथ ही हीरे-मोतियों से भरे सोने के सात कलश सामने ले आया। खजाने की चमक से नाई की आंखें चौंधिया गईं। पर अपनी भावनाओं को छुपाते हुए उसने रौब से उसे आदेश कि वह खजाने को उसके घर पहुंचा दे। राक्षस ने आदेश का पालन किया। फिर से राक्षस ने उसे छोड़ने के लिए कहा। पर नाई था तो चालू उसने राक्षस को फसल की कटाई करने को कहा।

ब्रह्मराक्षस जब फसल की कटाई कर ही रहा था कि दूसरा ब्रह्मराक्षस वहां से निकला। उसने अपने दोस्त की बुरी हालत का पूरा ब्यौरा लिया। दूसरा राक्षस बोला- 'पागल हो गए हो? राक्षस आदमी शक्तिशाली नहीं होते हैं। तुम मुझे उस आदमी का घर बातओ।'

पहले ब्रह्मराक्षस ने उसे दूर से ही घर दिखा दिया। और अपना काम करने लगा। इस बीच नाई भोज के लिए एक बड़ी मछली लेकर आया। पर बिल्ली आधी से ज्यादा मछली खा गई। गुस्से से सुलगती हुई नाइन बिल्ली को मारने के लिए झपटी, पर बिल्ली टूटी हुई खिड़की से भाग गई। उसने सोचा- बिल्ली इसी रास्ते से आएगी। सो वह मछली काटने की छुरी हाथ में लिए उसके लौटने का इंतजार करने लगी। उधर दूसरा राक्षस दबे पांव नाई के घर की ओर बढ़ा। उसी टूटी हुई खिड़की में से उसने अपना सिर भीतर घुसाया। बिल्ली की ताक में खड़ी नाइन ने तेजी से चाकू का वार किया और राक्षस की लम्बी नाक आगे से कट गई। दर्द से चिल्लाता वह भाग गया और शर्म के मारे फिर वह अपने मित्र के पास भी नहीं गया। पहले राक्षस ने पूरी फसल काटी और नाई के पास गया। नाई ने इस बार उल्टा शीशा दिखाया। राक्षस ने बड़े गौर से देखा। उसमें अपनी छवि न पाकर उसने राहत की सांस ली और नाचता-गुनगुनाता चला गया।